भी उनके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं। प्राचीन वीर-गाथायें महाभारत की पूर्ववर्ती हो सकती हैं, किन्तु महाभारत उनका संकलन मात्र नहीं है। अपने मूल रूप में महाभारत सम्भवतः महर्षि वेदव्यास की ही रचना है। मौखिक गायन के इस लोक-काव्य में अनुगायकों के द्वारा कुछ परिवर्धन होना स्वाभाविक है। किन्तु इन परिवर्धनों को महाभारत के संस्करण मााना आवश्यक नहीं है। ब्राह्मणों और क्षत्रियों के विरोध की कल्पना पश्चिमी विद्वानों का आग्रह मात्र है। इतिहास में इस विरोध के कोई प्रमाण नहीं मिलते। वीर-गाथा धर्म, नीति आदि के विविध विषयों का सम्मिश्रण भारतीय परम्परा में एक लेखक के द्वारा भी सम्भव है। विषय और शैली की विविधता भी आवश्यक रूप से महाभारत में कई लेखकों के योग को प्रमाणित नहीं करती। तार्किक द ष्टि से महाभारत के अनेक लेखकों की कल्पना उतनी ही संदिग्ध है, जितनी कि उसके एक-लेखक की कृति होने की कल्पना है। महाभारत की परम्परा और उसकी सम्पूर्ण योजना को देखते हुए उसके मौलिक रूप और उसके अधिकतम अंश को वेदव्यास की कृति मानना अनुचित नहीं है। व्यक्तियों, स्थानों, ग्रन्थों आदि के पर्याय भारतवर्ष में बहुत प्रचलित हैं। संस्कृत पर्याय-बहुल भाषा है। अतः जय, भारत और महाभारत के नाम भी आवश्यक रूप से उसके तीन संस्करणों के सूचक नहीं हैं, वे एक ही ग्रन्थ के पर्याय भी हो सकते हैं।

पाठ भेद की द ष्टि से इस समय महाभारत के दो पाठ उपलब्ध होते हैं। १. उत्तरी पाठ २. दक्षिणी पाठ। इन उत्तरी और दक्षिणी पाठों के आधार पर आजकल महाभारत के मुख्य रूप से पाँच संस्करण प्रकाशित हैं। जिनमें एक है निर्णय सागर प्रेस द्वारा प्रकाशित बम्बई संस्करण। द्वितीय है चित्रशाला प्रेस द्वारा प्रकाशिल पूना संस्करण। त तीय है- गीता प्रेस संस्करण। चतुर्थ है एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता से प्रकाशित बंगीय संस्करण।

इन चारों के अतिरिक्त पाँचवा महत्त्वपूर्ण संस्करण भण्डारकर प्राच्यविद्या शोध संस्थान पूना से प्रकाशित है।

यद्यपि महाभारत के स्वाध्याय हेतु सम्पूर्ण देश में गीता प्रेस गोरखपुर का संस्करण ही अधिक प्रचलित है। सम्भवतः मूल्य आदि की द ष्टि से सुलभ होने के कारण ऐसा है। तथापि विद्वानों द्वारा शोध की द ष्टि से भण्डारकर शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित संस्करण बहु समाद त है।

महाभारत के आख्यान —

महाभारत के अनेक आख्यानों एवं विषयों को लेकर विद्वानों ने यह मन्तव्य व्यक्त किया है कि यह एक व्यक्ति की रचना न होकर कई व्यक्तियों की कृति है, परन्तु आन्तरिक प्रमाणों एवं शैली के आधार पर यह सिद्ध होता है कि इसे एकमात्र व्यास ने ही लिखा है। भाषा तथा शैली की एकरूपता इसे एक व्यक्ति की रचना सिद्ध करती है।

महाभारत में अनेक आख्यान निबद्ध हैं, जिनके स्वरूप में पर्याप्त अन्तर है। कुछ पौराणिक हैं तो कुछ नैतिक और कुछ का सम्बन्ध लोक-कथाओं से है।

(१) पौराणिक पाख्यान— ये पूरातन आख्यान बहुत रोचक और शिक्षा प्रद हैं। इस प्रकार के आख्यानों में शकुन्तलोपाख्यान, मत्स्योपाख्यान, रामोपाख्यान, शिव्युपाख्यान, सावित्र्युपाख्यान, एवं नलोपख्यान प्रसिद्ध हैं।

(२) शकुन्तलो पाख्यान— इस उपाख्यान का वर्णन आदिपर्व के ७१ वें अध्याय में है। इसमें राजा दुष्यन्त एवं उनकी पत्नी शकुन्तला की मनोरम कथा वर्णित है। महाकवि कालिदास ने इसी से प्रेरणा-ग्रहण कर अपने विश्वप्रसिद्ध अभिज्ञान शाकुन्तल नामक नाटक की रचना की है।

(३) मत्स्योपाख्यान— इसका वर्णन वनपर्व के अन्तर्गत हुआ है। इसमें भगवान् के मत्स्यावतार की कथा कही गयी है। किस प्रकार प्रलय होने पर मत्स्य द्वारा मनु बचाये जाते हैं, इसी का इसमें विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस कथा का उल्लेख 'शतपथ ब्राह्मण' में भी है।

(४) रामोपाख्यान— वनपर्व के १८ अध्यायो (१७४-२११) में रामचरित का वर्णन हुआ है। इस कथा का आधार वाल्मीकि रामायण है और उसके अनेक श्लोकों को भी उद्ध त किया गया है।

(५) शिवि उपाख्यान— सुप्रसिद्ध राजा शिवि की कथा वन पर्व के १३०वे अध्याय में वर्णित है। ये उशीनर के राजा थे, जिन्होंने अपना मासं देकर बाज से शरणागत कपोत की रक्षा की थी।

(६) सावित्री उपाख्यान— इस कथा का वर्णन वनपर्व के २३१वें अध्याय में है। महाराज द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् और उसकी पत्नी सावित्री की कथा अत्यन्त लोकविश्रुत है। सावित्री भारतीय नारियों के लिए पतिव्रत धर्म की प्रतीक मानी जाती है। किस प्रकार उसने अपने पति के प्राणों की रक्षा की, उसी का इसमें वर्णन है। पतिव्रत धर्म की पराकाष्ठा सावित्री के जीवन में प्रदर्शित की गयी है। भारतीय जीवन में आज भी इस कथा का अद्भुत प्रभाव विद्यमान है।

(७) नलोपाख्यान— राजा नल एवं उनकी पत्नी दमयन्ती की प्रणय-गाथा अत्यधिक लोकप्रिय है। इस कथा का वर्णन वन पर्व के ४२ से ७१ अध्यायों तक किया गया है। महाकवि श्रीहर्ष ने इसी के आधार पर अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'नैषधचरित' का प्रणयन किया था।

नीतिकथा— महाभारत नीति-कथाओं का विशाल कोश है। वैदिक कथाओं तथा पुरातन कथाओं का पूर्ण विकास महाभारत में देखा जा सकता है। इन कथाओं में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का सम्मिलित स्वर मुखरित है। इनका नैतिक, स्तर अत्यन्त स्तरीय एवं विकसित है। महाभारत में ऐसी कहानियाँ आख्यान, व त्तान्त एवं संवादों के रूप में प्राप्त होती हैं और इनका मेल पंचतन्त्र एवं जातक कथाओं से भी स्थापित होता है। उसमें जो लोककथाएँ संकलित हैं, उनके संग्रहकर्त्ता सूत तथा अन्य ऋषि लोग थे और ऐसे व्यक्ति ब्राह्मण ग्रन्थों में आख्यानविद् के नाम से अभिहित किये गए हैं।

लोककथा— महाभारत में लोकसाहित्य-विषयक प्राणियों से सम्बद्ध घटनाओं और विश्वासों का अनेक स्थलों पर विवरण प्राप्त होता है। किसी पशु या पक्षी के वैशिष्ट्य को देखते उसी के आधार पर प्राचीन लोकसमाज में कथा को कल्पित करने की प्रव त्ति दिखलायी पड़ती है और महाभारत में ऐसे कथाएँ विद्यमान हैं।

नीति कथा तथा लोक कथा सम्बन्धी कुछ आख्यान—

(१) श गाल की कथा— शन्ति पर्व के मंकिगीता के अन्तर्गत प्राचीन श गाल-कथा का संकेत प्राप्त होता है। भीष्म ने युधिष्ठिर को मंकि नामक निरीह मनुष्य द्वारा कथित प्राचीन कथा को द ष्टान्त के रूप में सुनाया है।

(२) कुत्ते की कथा— यह नीति कथा आदि पर्व में आयी हे। इसमें कुत्ते की माँ का नाम सरमा है तथा उसे 'देवशुनी' की अभिधा प्राप्त है—जनमेजय एवमुक्तो देवशुन्या सरमया। यह कथा ऋग्वेद की 'सरमापणि-संवाद' का महाभारतीय रूप है।

(३) गज और कच्छप की कथा— इसका वर्णन आस्तिक पर्व अध्याय ११।१३-३१ में हुआ है। गरुड़ अम त लाने के लिए जाते हैं, तभी उन्हें भूख लगती है। कश्यप उन्हें निकटस्थ सरोवर में युद्ध करते हुए कच्छप और गज को मार कर खाने की राय देते हैं। ये दोनों पूर्व जन्म में दो भाई थे, जिनका नाम विभावसु (गज) और सुप्रतीक (कछुआ) था और वे धन का बँटवारा करने के लिए झगड़ने लगे। झगड़ते हुए दोनों को मार कर खाने में तीसरे (गरुड़) को लाभ होता है, यही इस कथा का सार है।

(४) कणिक नीति में जम्बुक कथा— ध तराष्ट्र कणिक से शत्रु को मारने के लिए किस प्रकार साम, दाम, दण्ड और भेद का प्रयोग करना चाहिए, यह कथा द ष्टान्त रूप से कही गयी है। इसका वर्णन आदि पर्व के अन्तर्गत सम्भव पर्व के अध्याय १४० में किया गया है।

(५) शाङ्‌र्गक-जरिता-कथा— इसका वर्णन भी आदिपर्व में किया गया है (२२१-२२२) खाण्डव वन के जलते समय जरिता नामक पक्षिणी तथा उसके बच्चों के भयभीत होने का इसमें वर्णन है।

(६) मनु और मत्स्य की कथा— पूर्ण वर्णित मत्स्यावतार की कथा।

(७) हंस काकीयोपाख्यान— इसका वर्णन कर्णपर्व में हुआ है। शल्य-कर्ण-संवाद के अन्तर्गत यह कथा शल्य द्वारा कही गयी है। विशुद्ध कला की द ष्टि से यह नीति कथा है।

(८) व्याघ्रगोमायु-संवाद— नीति-कथाओं की द ष्टि से महाभारत का शान्ति-पर्व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें द ष्टान्त-स्वरूप १२ नीति कथाएँ वर्णित हैं तथा व्याघ्र और सियार के संवाद के माध्यम से राजधर्म की नीति कथित है। इसका प्रतिपाद्य है कि राजा के निकट रहने वाले व्यक्तियों का स्वभाव कैसा होता है।

(९) उष्ट्र ग्रीवोपाख्यान— इसमें राजा को आलस्य जन्य दोष का परिहार करने की शिक्षा दी गयी है और द ष्टान्त के लिए आलसी ऊँट की कथा की गयी है।

(१०) नदी-समुद्र-संवाद— राजधर्म को समझाते हुए भीष्म ने युधिष्ठिर को नदी ओर समुद्र के संवाद को उदाहरण रूप से प्रस्तुत किया है। इस संवाद के द्वारा यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है कि समय को देखकर मनुष्य को व्यवहार करना चाहिये। 'ऋग्वेद' में भी विश्वामित्र और नदियों के संवाद का वर्णन है।

(११) श्वान द ष्टान्त— यह द ष्टान्त शान्तिपर्व के अन्तर्गत राजधर्म पर्व में (११६-११७ अध्याय) आया है। इस कहानी को भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा है कि किस प्रकार शरभ बना हुआ कुत्ता जब ऋषि को खाने के लिए उद्यत होता है तो पुनः ऋषि द्वारा श्वान बना दिया जाता है। इस कहानी में यह शिक्षा निहित है कि योग्यता देखकर ही राजा किसी भ त्य को उच्चपद प्रदान करे।

(१२) मत्स्योपाख्यान— (शान्तिपर्व १२/१३७ अध्याय) भीष्म ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करने के लिए यह द ष्टान्त प्रस्तुत किया है कि आलसी मनुष्य का विनाश हो जाता है। इसी के उदाहरण स्वरूप तीन मत्स्यों की कथा कही गयी है।

(१३) मार्जारिमूषक संवाद— (शान्तिपर्व १२/१३८) राजधर्म का उपदेश देने के लिए यह कथा कही गयी है। इसके द्वारा यह तथ्य प्रतिपादित किया गया है कि संकट के आ जाने पर युक्ति से कार्य करना चाहिये। इसमें चूहे की नीति-निपुणता दिखायी गयी है कि किस प्रकार उसने अपने शत्रु मार्जार से अपने को छुड़ा लिया।

(१४) ब्रह्मदत्त-पूजनी संवाद— (शान्तिपर्व, १२/१३१) यह नीतिकथा ब्रह्मदत्त तथा पूजनी नामक पक्षिणी के संवाद के रूप में प्रस्तुत की गयी है।

(१५) कपोत व्याध-संवाद— (शान्तिपर्व, ११/१४३-१४६) इस संवाद के द्वारा भीष्म ने युधिष्ठिर को बतलाया है कि अतिथि को गौरव प्रदान करना चाहिए। किस प्रकार व्याध की भूख मिटाने के लिए कपोत ओर कपोती अपना जीवन दान कर स्वर्ग पहुँच जाते हैं, इसी का इसमें वर्णन है। इसमें कपोत ने कपोती के लिए जो विलाप किया है, वह उत्कृष्ट कोटि के काव्य का उदाहरण है और इसमें सार्वभौम भाव भी व्यक्त हुए हैं— पत्नी के बिना घर जीर्ण अरण्य है।

(१६) ग ध्र-गोमायु-संवाद— (शान्तिपर्व, १२/१५३) यह संवाद अत्यन्त प्रसिद्ध है, जिसे मम्मट प्रभ ति आचार्यों ने प्रबन्ध ध्वनि के रूप में उदाहृत किया है।

किसी ब्राह्मण के एकलौते पुत्र की म त्यु हो गयी थी। वह उसे श्मशान में ले गया, पर वहाँ से वह मोहवश आ नहीं रहा था। म तक बालक को देखकर उसके मांस को खाने की इच्छा से ग ध्र ने उसके सम्बन्धियों से कहा— इस स्थान में जहाँ गिद्ध और श्र गाल भरे हुए हैं, जो नर कंकाल से पूर्ण है और यह सभी प्राणियों के लिए भयंकर है, यहाँ ठहरना व्यर्थ है।

अलं स्थित्वा श्मशाने स्मिन्ग ध्रगोमायु-संकुले।

कङ्काल-बहुले घोरे सर्वप्राणिभयङ्करे।।

मरा हुआ प्राणी, चाहे कितना ही प्रिय क्यों ने हो, वह जीवित नहीं हो सकता। सभी जीवधारियों को यही गति है।

न चेह जीवितः कश्चित् कालधर्ममुपागतः।

प्रियो वा यदि वा द्वेष्यः प्राणिनां गतिरीद षी।।

यहाँ गिद्ध यह चाहता है कि म तक शिशु के सम्बन्धी दिन में ही उसे छोड़कर चले जाएँ अन्यथा रात्रि में उसका देखना संभव नहीं है। अतः वह पुरुषों को विदा करने के लिए ही ऐसा वचन बोल रहा है। गिद्ध की इस बात को सुनकर वहीं बैठा हुआ श्र गाल बोलता है— अरे, मूर्खों! सोने के समान कान्तिवाले तथा यौवन को न प्राप्त किये हुए बालक को तुम लोग गिद्ध के कहने से शंका-रहित होकर क्यों छोड़ रहे हो? अभी जब तक सूर्य स्थित हैं तब तक तुम लोग इसे प्यार करो, सन्ध्याकाल का यह मुहूर्त बहुत प्रकार के विघ्नों से पूर्ण है, हो सकता है इस मुहूर्त के व्यतीत हो जाने पर यह बच्चा जी उठे।

अमुं कनकवर्णाभं बालमप्राप्तयौवनम्।

ग ध्रवाक्यात्कथं मूढास्त्यजध्वमविशङ्किताः।।

आदित्यो यं स्थितो मूढाः स्नेहं कुरुत साम्प्रतम्।

बहुविघ्नो मुहूर्त्तो यं जीवेदपि कदाचन।।

यहाँ श्र गाल का अभिप्राय है बालक के सम्बन्धियों को संन्ध्या तक रोकना। रात होते ही गिद्ध को दिखायी नहीं पड़ेगा और सूर्यास्त के बाद बालक के मांस का भक्षण सरलतापूर्व कर सकेगा। इस प्रकार यहाँ रात में मांस खाने में समर्थ श्र गाल के इस वचन से यह ध्वनित होता है कि तुम लोग इसे छोड़कर न जाओ। यह ध्वनि पूरे प्रबन्ध के वाक्यों से ध्वनित होती है। महाभारत में कहा गया है कि अन्त में शंकर जी प्रसन्न होकर उस बालक को जीवित कर देते हैं।

(१७) शाल्मलि व क्ष कथा— (महा० १२, १५४-१५७) चूँकि इस कहानी के पात्र व क्ष और वायु हैं इसलिए पंडितों ने इसे ध्वनि कथा कहा है। पर, यह कहानी नीतिशास्त्र के उपदेश के निमित्त द ष्टान्त के रूप में कही गई है। इसमें यही दिखलाया गया है कि दुर्बल को बलवान से नहीं लड़ना चाहिये।

(१८) बैल तथा ऊँट की कथा— (महा० १२/१७७) मंकि गीता के अन्तर्गत इस कहानी को भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा है। हल्के हास्य-विनोद का भी पुट है और यह शिक्षा दी गई है कि सर्वत्र अनुकूलता के होने पर भी भाग्य के उलटा होने से सारे कार्य बिगड़ जाते हैं।

(१९) काश्यप-श्र गाल-संवाद— (महा० १२/१७७) इस कथा के माध्यम से महाभारत कालीन आर्थिक वैषम्य पर प्रकाश डाला गया है। इसमें एक पात्र काश्यप है और दूसरे पात्र इन्द्र हैं, जिन्होंने श्र गाल का रूप धारण कर लिया है। मुनि काश्यप को किसी वैश्य के रथ से धक्का लगता है और वे गिर पड़ते हैं। क्रोधित होकर वे कहते हैं कि अब मैं प्राण छोड़ दूँगा, क्योंकि मेरे समान निर्धन को इस संसार में कोई स्थान नहीं है। उसी समय इन्द्र सियार का रूप धारण कर आते हैं और उन्हें उपदेश देते हैं कि बड़े भाग्य से तुम्हें मनुष्य का रूप प्राप्त हुआ है। संसार के सभी प्राणी दुःखी हैं। तुम आत्महत्या न कर धर्माचरण करो। इस पर मुनि ने आश्चर्यचकित होकर प्राण-त्याग का विचार छोड़ दिया। शान्तिपर्व में वर्णित सभी कथाएँ आपद्धर्म तथा नीति का उपदेश देनेवाली हैं और इनमें मार्मिक विनोद तथा रोचकता भी है।

(२०) गौतमी आदि का संवाद— इस कहानी में पांच पात्र हैं—गौतमी, लुब्धक, सर्प, म त्यु एवं काल। ब्राह्मणी गौतमी का पुत्र सर्प-दंश से मर जाता है और एक बहेलिया इसे देख कर सर्प को पकड़ लेता है। वह ब्राह्मणी के निकट सर्प को लाकर मारने लगता है। इस पर गौतमी कहती है कि मेरे

पुत्र की म त्यु का कारण सर्प नहीं है, अतः उसे न मारो। सर्प मनुष्य की बोली में बोलता है कि वह उसकी म त्यु का कारण नहीं है। कर्मानुसार जीव के फल होते हैं। म त्यु भी प्रकट होकर कहता है कि मैं भी इसकी म त्यु का कारण नहीं हूँ। काल के द्वारा नियंत्रित कर्म का ही मैंने पालन किया है। इस पर काल वहाँ प्रकट हुआ और बोला कि अपनी म त्यु का कारण स्वयं यह बालक ही है और वह कर्मानुसार ही म त्यु को प्राप्त हुआ है। इस पर बहेलिया संतुष्ट हो गया और उसने सर्प को छोड़ दिया।

(२१) सियार तथा बंदर का संवाद— युधिष्ठिर द्वारा यह पूछे जाने पर कि जो व्यक्ति ब्राह्मणों को वचन देकर भी उसे दान नहीं देता उसे कौन-सा फल प्राप्त होता है? इस पर भीष्म ने सियार और बंदर-संवाद को द टांत रूप में प्रस्तुत कर कहा कि ऐसे व्यक्ति को आशाएँ निष्फल हो जाती हैं। यह लघुनीति कथा है, पर इसपर सम्प्रदाय विशेष का प्रभाव परिलक्षित होता है।

(२२) श्येनकपोताख्यान— भीष्म ने युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहा कि शरण में आये हुए व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए। इस कथा में श्येन कपोत पर हमला करता है और कपोत राजा की शरण में चला जाता है श्येन राजा के पास आकर कहता है कि यह मेरा भक्ष्य है, अतः आप इसे मुझे दे दीजिये। राजा उसे कपोत के बदले अन्य जानवरों को देने का वचन देता है और शरणागत कपोत की रक्षा करता है। इस पर श्येन कहता कि यदि कबूतर आपको इतना प्रिय है तो आप अपना मांस निकाल कर दे दें। राजा अपना वचन पूरा करने के लिए तराजू पर चढ़ जाता है और देवता प्रसन्न होकर उसे दिव्य विमान से स्वर्ग में ले जाते हैं।

(२३) कीटाकोपख्यान— यह आख्यान व्यास और एक कीड़े का है। इसमें कीड़ा व्यास जी के उपदेश को ग्रहण कर विभिन्न योनियों में भ्रमण करता हुआ ब्रह्मत्व को प्राप्त करता है, यही इस कहानी का विषय है। इस कथा में उपदेश निहित है कि महात्मा की शिक्षा ग्रहण कर साधारण व्यक्ति भी उन्नति कर सकता है।

(२४) नकुलाख्यान— यह कथा आश्वमेधिक पर्व में है (१४/६०)। जनमेय ने वैशम्पायन से पूछा कि आप मेरे पितामह धर्मराज की किसी अद्भुत घटना का वर्णन करें। इस पर जनमेजय ने उस नेवले की कहानी सुनायी जिसने यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् युधिष्ठिर के समक्ष उपस्थित होकर उनके यज्ञ की निन्दा करते हुए कपोति-ब्राह्मण की कथा कही थी। किस प्रकार के क्षुधाकुल ब्राह्मण परिवार के निकट एक अतिथि आया और ब्राह्मण ने अपना भोजन उसे देकर उसकी क्षुधा शान्त की। ब्राह्मण के प्रसन्न होने पर कपोति सपरिवार स्वर्ग चला गया। इस कहानी में यह उपदेश दिया गया है कि सच्चे भाव से दिया गया अल्प दान भी बड़े दान से बढ़ कर है।

महाभारत के सभी आख्यान मूल कथा से इस प्रकार गुंफित हैं कि वे ऊपर से जोड़े गए नहीं लगते और प्रधान कथा के विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। इसमें कहानी में कहानी सुनाने की विधि की योजना की गयी है। सभी कथाएँ या तो राजधर्म अथवा नीतिधर्म की शिक्षा देने के लिए द ष्टान्त रूप में प्रस्तुत की गई हैं या इनके (कथाओं के) माध्यम से ब्राह्मणों का गौरव बढ़ाया गया है।

अनुवर्ती साहित्य—

अपनी असामान्य विशेषताओं और अपने गुण-बाहुल्य के कारण 'महाभारत' की 'पंचम वेद' के रूप मे याद किया जाता है। महासागरस्वरूप इस 'महाभारत' के गर्भ से ही 'गीता', 'विष्णुसहस्त्रनाम' 'अनुगीता', भीष्मस्तवराज' और 'गजेन्द्रमोक्ष' नामक 'प चरत्नों' की स ष्टि हुई है। 'भगवद्गीता' जैसी अद्वितीय जगद्व्यापी ख्याति की महाकृति का उद्गम होने के कारण 'महाभारत' का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

'महाभारत' संस्कृत-साहित्य के अनेक काव्यों, महाकाव्यों, नाटकों और कथाकृतियों का जन्मदाता है। उसमें कति-बुद्धि को प्रेरणा देने वाले तत्त्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। इसी द ष्टि से पाश्चात्य